e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, मंगलवार, 11 दिसंबर 2018, मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी, संवत् 2075 विक्रमी वर्ष-12, अंक-57, पृष्ठ-12, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

शब्द शब्द संघर्ष

DNA डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 संस्करण : लखनऊ राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक website : www.dnahindi.com डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

मौसम और जलवायु में क्या है फर्क

अभिमत

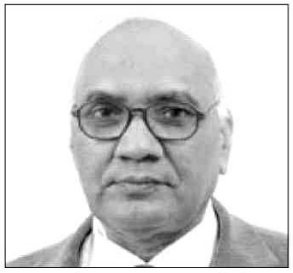

● प्रो. भरत राज सिंह

brsinghlko@gmail.com

अभी कुछ दिन पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 22 नवंबर को ट्वीटर के माध्यम से यह कहा था कि अमेरिका में वर्तमान में तापमान शून्य से दो डिग्री सेंटीग्रेड कम चल रहा है और वैज्ञानिक कह रहे कि यहां ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव है। ट्वीटर पर इसका उत्तर भारत की आस्था समराह ने दिया कि मौसम को जलवायु परिवर्तन से नहीं जोड़ा जा सकता है। यदि आपको इसका अंतर जानना है तो मैं कक्षा-2 की किताब से बता सकती हूं। ताकतवर देश के राष्ट्रपति दुनिया के प्रबुद्ध वर्ग में कैसे भ्रम फैला रहे हैं और वैश्विक तापमान बढ़ाने के जिम्मेदार ये लोग कैसे इसे नकार रहे हैं, यह जानना-समझना दिलचस्प है। 22 नवंबर को ग्लोबल वार्मिंग की विश्वव्यापी घटना का मजाक उड़ाते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने ट्वीट के माध्यम से कहा कि वाशिंगटन में पारा 2 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया है और यहां पर हो रही क्रूर और विस्तारित शीत लहर ने ग्लोबल वार्मिंग के दुनिया में फैलाए जा रहे भ्रम को समाप्त कर सभी रिकॉर्ड तोड़ रही है।

गुवाहाटी की 18 वर्षीय लड़की आस्था सरमाह ने ट्रंप के ट्वीट पर अपने जवाब में टिप्पणी की कि मैं आपसे 54 साल छोटी हूं। मैंने सिर्फ उच्च अंक के साथ हाईस्कूल समाप्त किया है लेकिन यहां तक कि मैं आपको बता सकती हूं कि मौसम परिवर्तन को जलवायु परिवर्तन नहीं कहते हैं। अगर आप इसे समझने में मेरी मदद चाहते हैं तो मैं आपको अपने विश्वकोश की किताब उधार दे सकती हूं जिसे मैंने दूसरे श्रेणी में पढ़ा था। इसमें चित्र के माध्यम से सबकुछ दर्शाया गया है। मैंने अभी औसत अंक के साथ हाई स्कूल पूर्ण किया है, लेकिन मैं आपको बता सकता हूं कि मौसम जलवायु नहीं है। इसे 27 हजार 800 लोगों ने महज कुछ घंटों में पढ़ा और खूब पसंद किया। इस पर भारत ही नहीं, अमेरिका में भी तमाम प्रतिक्रियाएं व्यक्त की गईं। याद रहे कि ट्रंप ने इस दावे के एक साल पूर्व भी एक ऐसा ही वक्तव्य एक ट्वीट से प्रसारित किया था जिसमें उन्होंने कहा था कि अमेरिका को उस समय पुरानी विचारधारा वाली ग्लोबल वार्मिंग से थोड़ा-सा फायदा होगा, जब अमेरिका का अधिकांश भाग बर्फ से घिर जाएगा। 2012 में जलवायु परिवर्तन पर हुई चर्चा के उपरांत वैज्ञानिकों की सर्वसम्मति से जो सहमति बनी थी, ट्रंप ने उसे पूर्णत: अस्वीकार करते हुए यह वक्तव्य दिया कि ग्लोबल वार्मिंग का सिद्धांत जो पेश किया गया था, वह अमेरिकी निर्यात को नुकसान पहुंचाने के लिए चीनियों की एक धोखाधड़ी थी। असल में वैज्ञानिक आमतौर पर ग्लोबल वार्मिंग शब्द को जलवायु परिवर्तन से जोड़ना अधिक पसंद करते हैं, जबकि उनके विचार से मनुष्यों की संख्या की बढ़ोतरी से उनके द्वारा उत्पन्न गर्मी और अधिक ग्रीनहाउस गैसों को उत्सर्जित करने के प्रभाव से चरम मौसम की घटनाओं के रूप में उत्पन्न हो रही है, न कि वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग की बढ़ोतरी की अधिक संभावना से है। ट्रंप ने ग्लोबल वार्मिंग शब्द को जलवायु परिवर्तन से जोड़ने के इस भेद को कुछ लोगों द्वारा उनके डॉलर को गिराने की व्याकुलता बताते हुए एक सिरे से खारिज कर दिया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नासा का एक वेब पेज है जिसपर मौसम और जलवायु के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। मौसम और जलवायु के बीच का अंतर एक समय है। मौसम वह होता है जो वायुमंडल की परिवर्तित परिस्थितियां थोड़ी-सी अवधि में होती हैं और जलवायु वह है जो अपेक्षाकृत लंबी अवधि के दौरान अपना प्रभाव उत्पन्न करती है। विशेषज्ञों ने ट्रंप के मूर्खतापूर्ण ट्वीट पर दिए गए बयान को तत्काल स्पष्ट किया था कि मौसम और जलवायु एक ही बात नहीं है। मौसम स्थानीय गर्मी से चलता है, जबकि ग्लोबल वार्मिंग गर्मी अंदर लेने के सापेक्ष गर्मी बाहर छोड़ने के अंतर से उत्पन्न होती है जो ऊपर से नीचे आती है। मौसम विज्ञानी माइक नेल्सन ने ट्विटर पर कहा था कि यह राजनीति नहीं है, सिर्फ थर्मोडायनामिक्स है। रॉयल भौगोलिक सोसाइटी के भूगर्भ विज्ञानी और उनके साथी जेस फीनिक्स ने कहा था- विज्ञान की अस्वीकृति सचमुच लोगों को मार डालेगी। तापमान मे हो रही बढ़ोतरी किसी भी अस्थाई रिकॉर्ड को तोड़ देगी। इस तरह का अत्यधिक मौसम वास्तव में जलवायु मॉडल वैश्विक आबादी को बढ़ाने का सौजन्य दिखाता है। इसलिए अपनी भौतिक अज्ञानता के लिए विज्ञान पर हमला करना बंद करो। मैरीलैंड विश्वविद्यालय में राजनीति के प्रोफेसर और बुश तथा ओबामा प्रशासन के पूर्व सलाहकार शिब्ली तेलहमी ने कहा था- ग्लोबल वार्मिंग के बारे में उसके जटिल डेटा पर बहस करना अपने आप में पागलपन नहीं है, इसके लिए भारी सबूत का स्पष्ट होना आवश्यक है परंतु अपने तीन दशक के शिक्षण में मैंने कभी भी ऐसा छात्र नहीं पाया जो इस तरह का मूर्खतापूर्ण अनुमान बताता हो, जैसा कि ट्रंप अपने ट्वीट से बता रहे है। जबकि 22 नवंबर के अपने ट्वीट के शुरुआती 13 मिनट बाद ट्रंप ने पुन: स्पष्ट किया कि इसे मीडिया द्वारा गलत दावे के साथ पेश किया जा रहा है और मुझे वाहनों के ट्रैफिक जाम के लिए भी दोषी ठहराया जा रहा है। ट्रंप ने आगे लिखा कि समाचार मीडिया से आप उनके नकली प्रचार से जीत नहीं सकते हैं। आज एक बड़ी कहानी यह है कि मैंने कड़ी मेहनत की है और पेट्रोल की कीमतें इतनी कम हो गई हैं कि अधिक से अधिक लोग गाड़ी चला रहे हैं और मैं अपने इस महान राष्ट्र भर में यातायात जाम पैदा करने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा रहा हूं। मुझे सभी क्षमा करें!

अमेरिकी मीडिया ने इस सप्ताह के अंत में थैंक्स गिविंग पर यात्रियों की संभावित रिकॉर्ड भीड पर व्यापक रूप से रिपोर्ट की है, लेकिन भीड़ से ट्रैफिक जाम के लिए राष्ट्रपति को दोषी ठहराने के लिए मीडिया आउटलेट को कोई मामला नहीं मिला। फॉक्स न्यूज ट्रंप के पसंदीदा मीडिया आउटलेट द्वारा रिपोर्ट की गई कि वास्तव में 2017 में ईंधन की उच्च कीमत के कारण थैंक्सगिविंग पर उम्मीद से कम भीड़ थी। अब आप इस बहस से यह समझ सकते है कि विश्व के सबसे शक्तिशाली विकसित देश अमेरिका का राष्ट्रपति मौसम और जलवायु पर क्यों बहस का गलत प्रचार कर रहा है और भ्रम फैला रहा है, ताकि उसपर कार्बन घटाने जैसे प्रयास पर अधिक दबाव पड़े। जबकि भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पेरिस जलवायु समिट-2015 में अपील करते हुए दो फीसदी कार्बन घटाने हेतु प्रस्ताव दिया और पूरे विश्व में भारत की सराहना हुई। आज भारत वैकल्पिक-अक्षय ऊर्जा के उपयोग मे 175 गीगावाट का 2022 तक उपयोग करने हेतु अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस सार्थक प्रयास से भारत द्वारा ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न हो रही जलवायु परिवर्तन की विभीषिका कम करने में अमूल्य योगदान को आनेवाले इतिहास में याद किया जाएगा।